

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

बारहवीं हिन्दी

पाठ-उषा

कवि - शमशेर बहादुर सिंह

मॉड्यूल 1

शमशेर बहादुर सिंह 13 जनवरी 1911- 12 मई 1993 आधुनिक हिंदी कविता की प्रगतिशील त्रयी के एक स्तंभ हैं। हिंदी कविता में अनूठे माँसल एंड्रीए बिंबों के रचयिता शमशेर आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा से जुड़े रहे। तार सप्तक से शुरुआत कर 'चुका भी नहीं हूँ मैं' के लिए साहित्य अकादमी सम्मान पाने वाले शमशेर ने कविता के अलावा डायरी लिखी और हिंदी उर्दू शब्दकोश का संपादन भी किया।

शमशेर का जन्म 13 जनवरी 1911 को देहरादून में हुआ। उनके पिता का नाम तारीफ सिंह और माँ का परम देवी था। उनके भाई तेज बहादुर उनसे दो साल छोटे थे। उनकी माँ दोनों भाइयों को 'राम-लक्ष्मण की जोड़ी' कहती थीं। शमशेर 8-9 साल के थे जब उनकी माँ की मृत्यु हो गई। लेकिन दोनों भाइयों की यह जोड़ी शमशेर की मृत्यु तक बनी रही। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके ननिहाल देहरादून में हुई। बाद की शिक्षा गोंडा और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। 1935-36 में उन्होंने उकील बंधुओं से कला प्रशिक्षण लिया।

सन् 1929 में 18 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह धर्मवती के साथ हुआ। छः वर्ष के साथ के बाद 1935 में टीबी से धर्मवती की मृत्यु हो गई। चौबीस वर्ष के शमशेर को मिला जीवन का यह अभाव कविता में विभाव बनकर हमेशा मौजूद रहा। काल ने जिसे छीन लिया, उसे अपनी कविता में सजीव रखकर वे काल से होड़ लेते रहे।

युवाकाल में शमशेर वामपंथी विचारधारा और प्रगतिशील साहित्य से प्रभावित हुए। उनका जीवन निम्नमध्यवर्गीय व्यक्ति का था।

उनकी मृत्यु 12 मई 1993 को अहमदाबाद में हुई।

रूपाभ', इलाहाबाद में कार्यालय सहायक (1939), 'कहानी' में त्रिलोचन के साथ (1940), 'नया साहित्य', बंबई में कम्प्यून में रहते हुए (1946), माया में सहायक संपादक (1948-54), नया पथ और मनोहर कहानियाँ में संपादन सहयोग। दिल्ली विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान की एक महत्वपूर्ण परियोजना 'उर्दू हिन्दी कोश' का संपादन (1965-77), प्रेमचंद सृजनपीठ, विक्रम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष (1981-85)

(1)

- **काविता-संग्रह:-** कुछ कविताएं (1956), कुछ और कविताएं (1961), चुका भी नहीं हूँ मैं (1975), इतने पास अपने (1980), उदिता - अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980), बात बोलेगी (1981), काल तुझसे होड़ है मेरी (1988)।
- **निबन्ध-संग्रह:-** दोआब
- **कहानी-संग्रह:-** प्लाट का मोर्चा

शमशेर का समग्र गद्य कुछ गद्य रचनायें तथा कुछ और गद्य रचनायें नामक पुस्तकों में संग्रहित हैं ! उनकी प्रमुख कविताओं में 'अमन का राग'(प्रकाशित 1952), 'एक पीली शाम'(1953), 'एक नीला दरिया बरस रहा' प्रमुख है।

हिंदी साहित्य में माँसल एंड्रीए सौंदर्य के अद्वितीय चितरे शमशेर आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक रहे। उन्होंने स्वाधीनता और क्रांति को अपनी 'निजी चीज' की तरह अपनाया। इंद्रिय-सौंदर्य के सबसे संवेदनापूर्ण चित्र देकर भी वे अज्ञेय की तरह सौंदर्यवादी नहीं है। उनमें एक ऐसा ठोसपन है जो उनकी विनम्रता

को ढुलमुल नहीं बनने देता, साथ ही किसी एक चौखटे में बंधने भी नहीं देता। निराला उनके प्रिय कवि थे। उन्हें याद करते हुए शमशेर ने लिखा था-

'भूल कर जब राह- जब-जब राह.. भटका मैं/ तुम्हीं झलके हे महाकवि,/ सघन तम की आंख बन मेरे लिए।'

शमशेर के राग-विराग गहरे और स्थायी थे। अवसरवादी ढंग से विचारों को अपनाना-छोड़ना उनका काम नहीं था। अपने मित्र-कवि केदारनाथ अग्रवाल की तरह शमशेर एक तरफ 'यौवन की उमड़ती यमुनाएं' अनुभव कर सकते थे, दूसरी तरफ 'लहू भरे गवालियर के बाजार में जुलूस' भी देख सकते थे। उनके लिए निजता और सामाजिकता में अलगाव और विरोध नहीं था, बल्कि दोनों एक ही अस्तित्व के दो छोर थे।

शमशेर उन कवियों में थे, जिनके लिए मार्क्सवाद की क्रांतिकारी आस्था और भारत की सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा में विरोध नहीं था।

कविता का प्रतिपादय एवं सार

प्रतिपाद्य- प्रस्तुत कविता 'उषा' में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होने वाली प्रकृति का शब्द-चित्र उकेरा है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। कवि भोर की आसमानी गति की धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। इसलिए वह सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो

(2)

गाँव की सुबह से जुड़ता है-वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर

चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ हैं। कवि ने नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का प्रयोग किया है। **सार-** कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंख-सा दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीप दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल को किसी ने धो दिया हो या उस पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा है। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1.

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है) (पृष्ठ-36)

शब्दार्थ- भोर-प्रभात। नभ-आकाश। चौका-रसोई बनाने का स्थान।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'उषा' कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। इस अंश में सूर्योदय का मनोहारी वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि बताता है कि सुबह का आकाश ऐसा लगता है मानो नीला शंख हो। दूसरे शब्दों में, इस समय आसमान शंख के समान गहरा नीला लगता है। वह पवित्र दिखाई देता है। वातावरण में नमी प्रतीत होती है। सुबह-सुबह आकाश ऐसा लगता है मानो राख से लीपा हुआ कोई चौका है। यह चौका नमी के कारण गीला लगता है।

(3)

विशेष-

- (i) कवि ने प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है।
- (ii) 'शंख जैसे' में उपमा अलंकार है।
- (iii) सहज व सरल शब्दों का प्रयोग किया है।
- (iv) ग्रामीण परिवेश सजीव हो उठता है।
- (v) नए उपमानों का प्रयोग है।

प्रश्न

- (क) प्रातःकालीन आकाश की तुलना किससे की गई है और क्यों?
- (ख) कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है?
- (ग) 'अभी गीला पड़ा है'-से क्या तात्पर्य है?
- (घ) प्रातःकालीन नभ के लिए कवि ने किन उपमानों का प्रयोग किया है?

उत्तर-

- (क) प्रातःकालीन आकाश की तुलना नीले शंख से की गई है, क्योंकि वह शंख के समान पवित्र माना गया है।
- (ख) कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका इसलिए कहा है, क्योंकि भोर का नभ सफेद व नीले रंग से मिश्रित दिखाई देता है।
- (ग) इसका अर्थ यह है कि प्रातःकाल में ओस की नमी होती है। गीले चौके में भी नमी होती है। अतः नीले नभ को गीला बताया गया है।
- (घ) प्रातःकालीन नभ के लिए कवि ने दो उपमानों का प्रयोग किया है-(i) नीला शंख, (ii) राख से लीपा चौका। ये उपमान सर्वथा नवीन हैं।

2.

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धूल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

(पृष्ठ-36)

(4)

शब्दार्थ- सिल—मसाला पीसने के लिए बनाया गया पत्थर। केसर- विशेष फूल। मल देना- लगा देना।
प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'उषा' कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि शमशेर बहादुर सिंह हैं। इस कविता में कवि ने सूर्योदय से पहले के वातावरण का सुंदर चित्र उकेरा है। कविता के इस अंश में सूर्योदय का मनोहारी चित्रण किया गया है।
व्याख्या- कवि प्रातःकालीन आकाश का वर्णन करते हुए कहता है कि सूर्य क्षितिज से ऊपर उठता है तो हलकी लालिमा की रोशनी फैल जाती है। ऐसा लगता है कि काली रंग की सिल को लाल केसर से धो दिया गया है। अँधेरा काली सिल तथा सूरज की लाली केसर के समान लगती है। इस समय आकाश ऐसा लगता है मानो काली स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। अँधेरा काली स्लेट के समान व सुबह की लालिमा लाल खड़िया चाक के समान लगती है।

विशेष-

- (i) कवि ने प्रकृति का मनोहारी वर्णन किया है।
- (ii) पूरे काव्यांश में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
- (iii) मुक्तक छंद का प्रयोग है।
- (iv) नए बिंबों व उपमानों का प्रयोग है।
- (v) सरल, सहज खड़ी बोली में सुंदर अभिव्यक्ति है।

द्वारा-

संतोष कुमार खरवाल

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

(5)